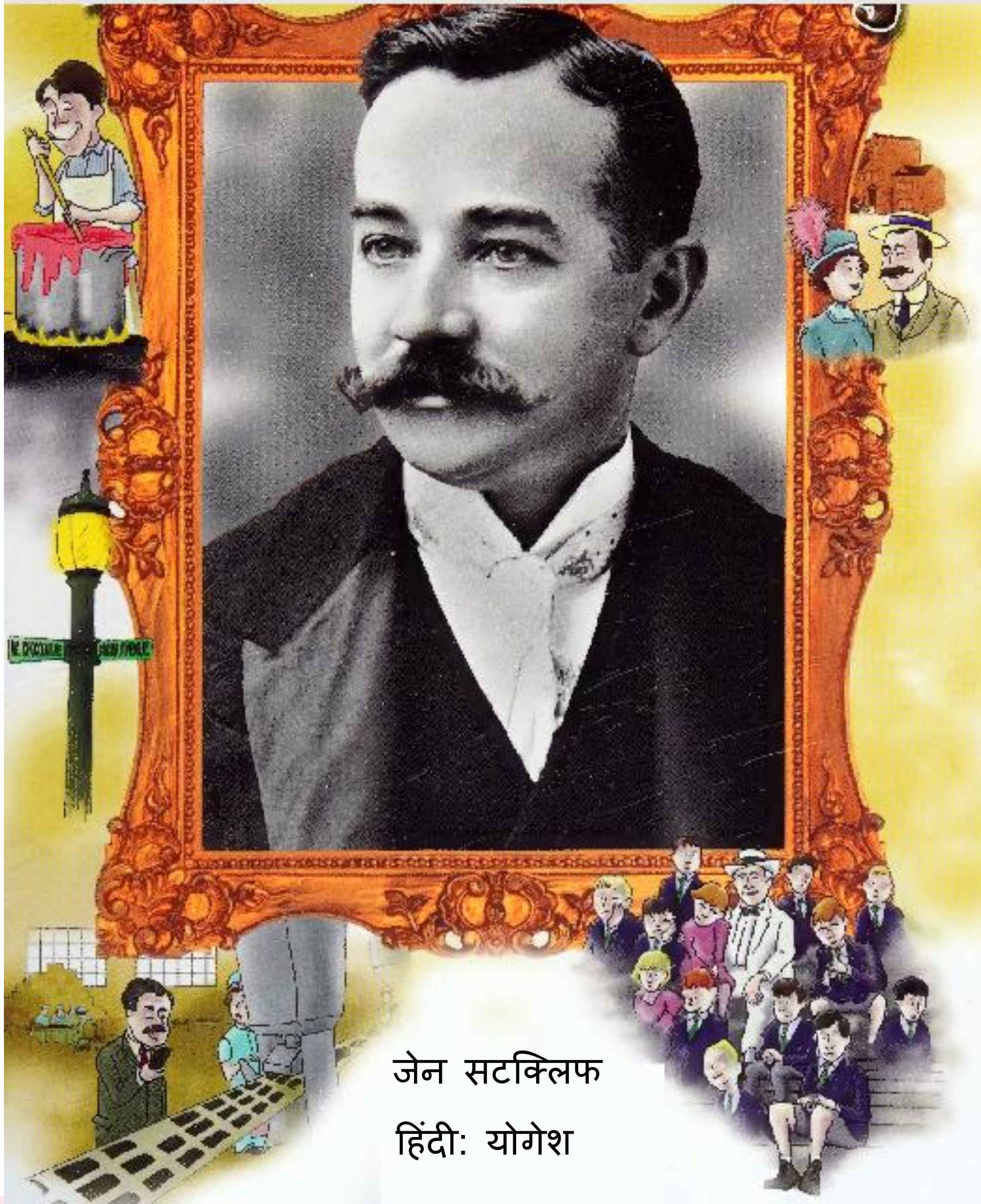
मिल्टन हर्षी

चॉकलेट के बादशाह



जेन सटक्लिफ

हिंदी: योगेश

अनुक्रमाणिका

परिचय	५
१. चॉकलेट निर्माता	६
२. करो, फिर कोशिश करो	१३
३. सफलता का स्वाद	२०
४. कॉर्नफील्ड का कारखाना	२६
५. किटी का विचार	३६
समयरेखा	४४
मिल्टन हर्षी विद्यालय	४५



परिचय

हर्षी, यह नाम शायद सभी को पता होगा। क्योंकि मिल्टन हर्षी का नाम जुड़ा है खाने की सबसे स्वादिष्ट वस्तुओं में से एक, यानि चॉकलेट के साथ। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में उन्होंने मिल्क चॉकलेट बनाने की एक नई विधि खोज निकाली थी। पांच सेण्ट में बिकने वाली उनकी चॉकलेटें एक बहुत बड़ा व्यापार बन गईं।

लेकिन मिल्टन हर्षी को हर बार सफलता नहीं मिली थी। शुरुआती दौर में जब उन्होंने चॉकलेट बेचने की कोशिश की तो वे सफल नहीं हो पाए। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने चॉकलेट बनाने की नयी विधियां खोजने के लिए बहुत मेहनत की। वे कोशिश करते ही रहे जब तक कि वे एक सफल दौलतमंद व्यापारी नहीं बन गये। और फिर अपनी कमाई हुई दौलत को दान करके उन्होंने सभी को अचंभित कर दिया।

यह उन्हीं की कहानी है।

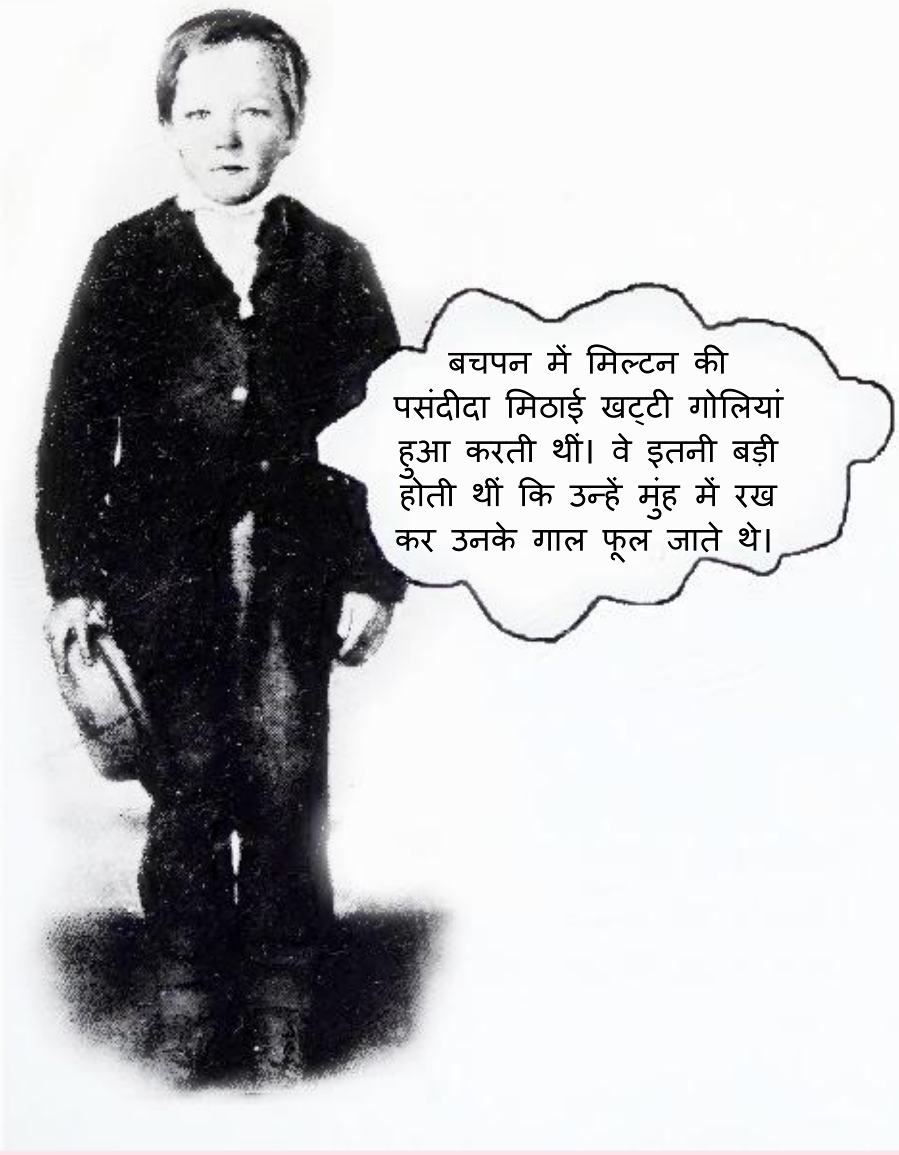


1. मिठाई निर्माता

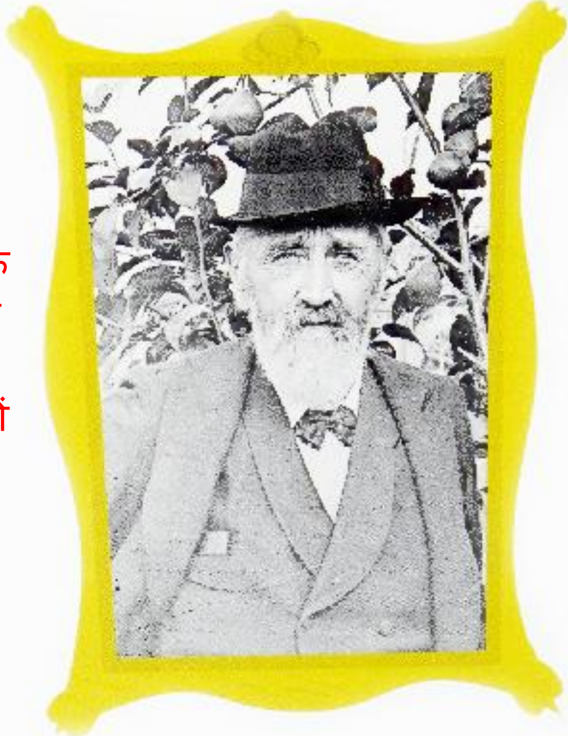
कल्पना कीजिए कि आप एक ऐसे देश में बड़े हो रहे हैं जहाँ चॉकलेट ही नहीं है। मिल्टन हर्शी के साथ भी ऐसा ही हुआ। जब उनका जन्म 1857 में हुआ, तब चॉकलेट कैंडी यूरोप में हाल ही में बनी एक नई चीज़ थी। संयुक्त राज्य अमेरिका की दुकानों में तो यह उपलब्ध ही नहीं थी।

मिल्टन अपने पैसों से पिपरमिंट, टैफ़ी और खट्टी गोलियाँ (सॉरबॉल्स) तो खरीद सकते थे, लेकिन चॉकलेट का अपना पहला स्वादिष्ट कौर चखने के लिए उन्हें कई साल इंतज़ार करना पड़ा।

मिल्टन का जन्म पेनसिल्वेनिया के डेरी शहर में पत्थरों से बने एक फार्म हाउस में हुआ था। डेरी टाउनशिप के ज़्यादातर लोग मेनोनाइट धर्म को मानते थे। मिल्टन का परिवार भी उसी धर्म का था। मेनोनाइट लोग सादा कपड़े पहनते थे और किसान के रूप में कड़ी मेहनत करते थे। वे क्लबों में नाचने नहीं जाते थे और न ही ताश खेलते थे। वे तो मनोरंजन के लिए किताबें भी नहीं पढ़ते थे।



लोग कहते थे कि मिल्टन के पिता हेनरी हर्षी बड़े सपने देखने वालों में थे।

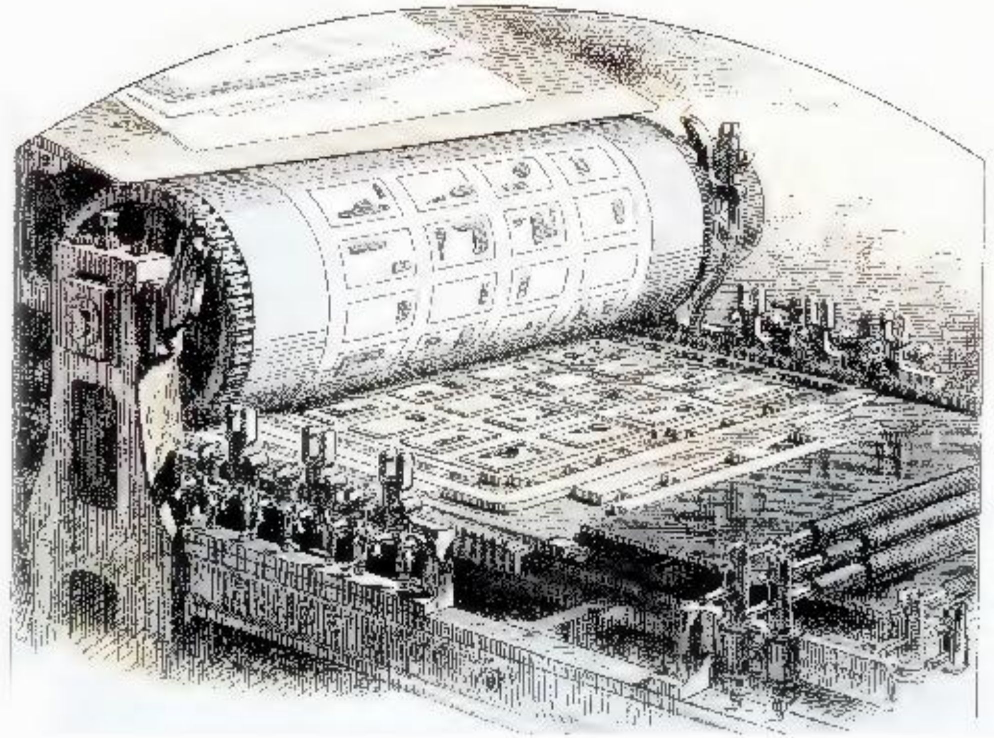


लेकिन मिल्टन के पिता, हेनरी, एक मेनोनाइट होने के बावजूद कुछ अजीब काम करते थे। उन्हें किताबें पढ़ना पसंद था। उन्हें किसी भी नई चीज़ के बारे में जानना अच्छा लगता था—नई मशीनें, नई फसलें, या खेत के जानवरों की नई नस्लें। हेनरी हमेशा अमीर बनने के नए तरीक़ों के सपने देखते रहते थे। लेकिन उनके किसी भी बड़े विचार ने कभी काम नहीं किया।

मिल्टन की माँ, फैनी, बड़े विचारों में विश्वास नहीं करती थीं। वह कड़ी मेहनत में विश्वास करती थीं। इसलिए मिल्टन ने परिवार के खेत पर मेहनत करना सीखा। वह सुबह जल्दी उठकर गायों को चरागाह तक ले जाता और मुर्गियों को दाना खिलाता था।

लेकिन मिल्टन अपने पिता जैसे भी थे। उन्हें पता था कि एक साधारण किसान बनकर वह कभी खुश नहीं रह सकते। वह हमेशा यह सोचते रहते थे कि उनके खेत के परे क्या है।

जब मिल्टन बड़े हो रहे थे, तब अक्सर लड़के किसी काम को सीखने के लिए जल्दी स्कूल छोड़ देते थे। मिल्टन ने भी ऐसा ही किया। तेरह साल की उम्र में उन्हें एक नौकरी मिली, जहाँ वह प्रिंटिंग प्रेस चलाना सीख रहे थे।



मिल्टन की नई नौकरी प्रिंटिंग प्रेस पर अक्षरों के ब्लॉकों को जमाने की थी। हर ब्लॉक को हाथ से लगाना पड़ता था।



बेचारे मिल्टन को अपनी नौकरी से नफ़रत थी। वह अनाड़ी था। जब वह चीज़ें गिरा देता, तो उसका मालिक गुस्से से फट पड़ता था। एक डाँट के बाद, मिल्टन ने अपनी भूसे की बनी टोपी "जानबूझकर" (जैसा कि उसने बाद में बताया), प्रेस में गिरा दी। प्रेस जाम हो गई, और मिल्टन को नौकरी से निकाल दिया गया।

फैनी जानती थीं कि प्रिंटिंग का काम उनके बेटे के लिए नहीं है। उन्होंने उसके लिए पेंसिल्वेनिया के लैंकेस्टर में जोसेफ रॉयर की आइसक्रीम और कैंडी की दुकान पर नौकरी ढूँढ़ दी। मिल्टन बहुत खुश हुआ। कैंडी बनाना प्रिंटिंग प्रेस पर काम करने की तुलना में कहीं ज़्यादा मज़ेदार लग रहा था।

मिल्टन सही था। कैंडी बनाना मज़ेदार काम था। और उसके लिए हैरानी की बात यह थी कि उसने महसूस किया कि उसमें इस काम की प्रतिभा भी थी। मिस्टर रॉयर अपनी रेसिपी लिखते नहीं थे। मिल्टन बस मिश्रण में थोड़ा-सा यह या थोड़ा-सा वह डाल देता था। उसने जल्दी ही सीख लिया कि कौन-कौन-से पदार्थ टॉफ़ी, पिपरमिंट या कैरामेल को और अधिक स्वादिष्ट बना देते हैं।

मिल्टन की कैंडी बहुत लोकप्रिय हो गई। मिस्टर रॉयर की दुकान पर चार साल काम करने के बाद मिल्टन अब एक नौजवान बन चुका था। वह कद में छोटा लेकिन मजबूत काठी का था, नीली आँखों और घनी भौंहों वाला। उसकी आवाज़ नरम और कोमल थी।

एक धमाकेदार गलती

रॉयर की दुकान पर काम करते हुए मिल्टन से भी अपनी हिस्से की गलतियाँ होती थीं। एक बार वह यह भूल गया कि वह मूँगफली भून रहा था। वह गर्म हवा फेंकने वाली मशीन — जो मूँगफलियाँ भूनती थी — बंद किए बिना ही दिन खत्म होने पर घर चला गया।

उस शाम बाद में वह बगल के थिएटर में एक नाटक देखने गया। जब उसे जली हुई मूँगफली की गंध आई तो वह दौड़कर दुकान पर वापस आया। जली हुई मूँगफलियों के छिलके सूखे पत्तों की तरह हवा में उड़ रहे थे!

मिल्टन मिस्टर रॉयर से जितना सीख सकता था, सीख चुका था। उसने तय किया कि अब अपना खुद का कैंडी व्यवसाय शुरू करने का समय आ गया है। वह साल 1876 था। संयुक्त राज्य अमेरिका अपनी सौवीं वर्षगांठ मना रहा था। इस जन्मदिन का एक बड़ा हिस्सा पेंसिल्वेनिया के फ़िलाडेल्फ़िया शहर में मनाया जा रहा था। हज़ारों लोग इसमें शामिल होने के लिए शहर में उमड़ रहे थे।

मिल्टन ने तय किया कि फ़िलाडेल्फ़िया उसकी कैंडी बेचने के लिए सबसे अच्छी जगह होगी। उसने उपकरण खरीदने के लिए अपनी माँ की बहन, मैटी, से 150 डॉलर उधार लिए। उसके चाचा, एब, ने उसे वहाँ शिफ़्ट होने में मदद की। उन्नीस साल की उम्र में, मिल्टन फ़िलाडेल्फ़िया की ओर निकल पड़ा।



2. करो, फिर कोशिश करो

स्प्रिंग गार्डन स्ट्रीट पर मिल्टन की दुकान में कैंडी की मीठी खुशबू फैली रहती थी।

मिल्टन अपनी हर एक कैंडी एक पैसे में बेचता था। लेकिन कैंडी चीनी से बनती थी — और चीनी बहुत महंगी थी। उसे सिर्फ चीनी का खर्च निकालने के लिए ही बहुत सारी कैंडी बेचनी पड़ती थी।

मिल्टन कड़ी मेहनत करता था, ठीक वैसे ही जैसे वह खेत पर किया करता था। उसकी माँ और आंटी मैटी सहायता के लिए फ़िलाडेल्फ़िया आ गईं। फिर भी, दुकान से जितना पैसा बाहर जा रहा था, उससे कम भीतर आ रहा था।

बार-बार आंटी मैटी, अंकल एब को और पैसे भेजने के लिए पत्र लिखती रहीं। लेकिन वह कभी पर्याप्त नहीं होता था। आख़िरकार, छह साल बाद, मिल्टन ने अपनी दुकान के दरवाज़े हमेशा के लिए बंद कर दिए।

मिल्टन कैंडी बनाना छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। उसे डेनवर, कोलोराडो में एक अन्य कैंडी निर्माता के साथ काम मिल गया। यह व्यक्ति ताज़े दूध से स्वादिष्ट कैरामेल बनाता था।

मिल्टन ने अपने व्यवसाय के बारे में लोगों को बताने के लिए कार्ड छपवाए। इस कार्ड पर फ़िलाडेल्फ़िया की एक प्रसिद्ध इमारत की तस्वीर थी।



मिल्टन को अपनी नौकरी पसंद थी। लेकिन वह अब भी अपना खुद का व्यवसाय चलाने का सपना देखता था। इसलिए कुछ महीनों बाद वह शिकागो गया, फिर न्यू ऑरलियन्स, और फिर न्यूयॉर्क। हर जगह मिल्टन ने कैंडी बनाकर बेचने की कोशिश की। और हर जगह वह असफल रहा। वह अपने बिलों का भुगतान करने जितना भी पैसा नहीं कमा पाता था।

1886 तक, मिल्टन के पास केवल इतना पैसा बचा था कि वह ट्रेन का टिकट खरीदकर अपने घर, लैंकेस्टर, लौट सके। उसने अंकल एब के दरवाज़े पर दस्तक दी, लेकिन अंकल एब उससे कुछ लेना-देना नहीं रखना चाहते थे। उन्हें लगता था कि उन्होंने मिल्टन के सपनों पर पहले ही काफी पैसा खर्च कर दिया था।

घोड़े के साथ बदकिस्मती

न्यूयॉर्क में मिल्टन खाँसी की गोलियाँ भी बेचता था और कैंडी भी। एक दिन, कुछ लड़कों ने उसके घोड़े के नीचे पटाखे फेंक दिए। घोड़ा डर गया और सड़क पर बेकाबू होकर दौड़ पड़ा। मिल्टन उस बेचारे जानवर के पीछे भागा, लेकिन वह उसे पकड़ नहीं पाया।



"तुम उसके जाने का रास्ता उन खाँसी की गोलियों से पता लगा सकते थे जो सड़क पर बिखरी पड़ी थीं," उसने अपनी माँ से कहा।

आंटी मैटी मिल्टन के नए कैरामेल व्यवसाय में उसकी मदद करती थीं। उनका एक काम टिन की पन्नी में कैंडी लपेटना था।



मिल्टन अपनी कैंडी एक गाड़ी में बेचता था, जिसे वह खुद शहर में धकेलकर ले जाता था। लोगों को मिल्टन के कैरामेल पसंद आते थे। फिर भी, वह अपने व्यवसाय को और बड़ा बनाने का सपना देखता था— लेकिन उसके पास ऐसा करने के लिए पैसे नहीं थे।

फिर एक दिन, इंग्लैंड से आया एक यात्री लैंकेस्टर पहुँचा और उसने मिल्टन के कुछ कैरामेल खरीदे। उसने पहले कभी ऐसी चीज़ का स्वाद नहीं चखा था! वह व्यक्ति इंग्लैंड में ये कैरामेल बेचना चाहता था। उसने मिल्टन को बहुत बड़ा ऑर्डर दिया।

यहाँ तक कि उसके परिवार को भी लगता था कि वह असफल हो गया है! अगर मिल्टन उसी समय कैंडी का काम छोड़ देता, तो कोई उसे दोष नहीं देता। लेकिन उसने हार मानने से इनकार कर दिया।

एक मित्र ने मिल्टन को रहने की जगह दी और इतना पैसा भी दिया कि वह एक बार फिर अपना कैंडी व्यवसाय शुरू कर सके। मिल्टन को डेनवर में बनाए गए स्वादिष्ट कैरामेल याद थे। इसलिए इस बार उसने ताज़े दूध से बने कैरामेल बेचने का फैसला किया।

उसने अपने नए व्यवसाय का नाम लैंकेस्टर कैरामेल कंपनी रखा।



मिल्टन जानता था कि यह ऑर्डर ही वह मौका है जिसकी उसे जरूरत थी। लेकिन इतने सारे कैरामेल बनाने के लिए उसे और उपकरण और सामान चाहिए थे। मिस्टर ब्रेनेमन नाम के एक बैंकर ने मिल्टन को 700 डॉलर उधार देने पर सहमति जताई। मिल्टन को यह ऋण नब्बे दिनों में चुकाना था।

मिल्टन ने और कामगार रखे। उसने और उपकरण खरीदे। वह इंग्लैंड वाले खरीदार के लिए सभी कैरामेल बनाने के लिए कड़ी मेहनत करता रहा। असल में, नब्बे दिन पूरे होने पर भी वह अभी काम में लगा ही था। मिल्टन को मिस्टर ब्रेनेमन को बताना पड़ा कि वह ऋण वापस नहीं चुका सकता। और इससे भी बुरी बात यह थी कि उसे सामान के लिए और पैसे चाहिए थे।



मिस्टर ब्रेनेमन जानते थे कि उन्हें और ऋण नहीं देना चाहिए। बैंक में उनके अधिकारी कभी इस ऋण को मंज़ूरी नहीं देते। लेकिन मिस्टर ब्रेनेमन मिल्टन को पसंद करते थे। इसलिए उन्होंने नियमों के ख़िलाफ़ जाकर एक काम किया— उन्होंने ऋण पर मिल्टन की जगह अपना नाम लिख दिया। अगर मिल्टन ऋण नहीं चुका पाता, तो इसे उन्हें खुद चुकाना पड़ता।

यह अतिरिक्त पैसा मिल्टन के लिए ऑर्डर पूरा करने के वास्ते पर्याप्त था। वह कैरामेल बनाता और बेचता रहा। वह मिस्टर ब्रेनेमन की दयालुता का बदला —और ऋण—चुकाने के लिए उत्सुक था।

जैसे ही इंग्लैंड से भुगतान आया, वह बैंक की ओर दौड़ा। लैंकेस्टर के लोग उसे देखकर हँसे होंगे— मिल्टन को तो अपना कैंडी से सना हुआ एप्रन तक उतारने का ध्यान नहीं रहा था।

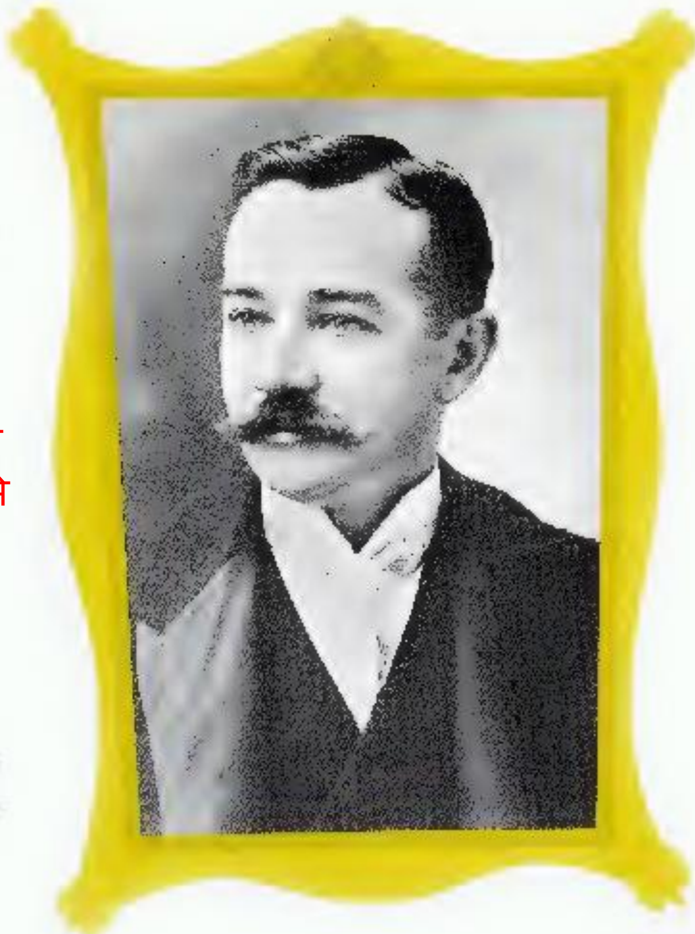
वह दिन मिल्टन हर्षी के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। कई असफलताओं के बाद, अचानक ऐसा लगने लगा कि वह सचमुच सफल हो सकता है।



मिल्टन को नई-नई तरह की कैरामेल मिठाइयों के साथ प्रयोग करना बहुत अच्छा लगता था। उसने कुछ कैरामेल गाढ़ी मलाई से बनाईं। कुछ पर उसने आइसिंग चढ़ाई। कुछ और कैरामेलों को उसने आकर्षक आकृतियों में बनाया। उसके कामगारों को यह देखकर मज़ा आता था कि उनका मालिक आस्तीन चढ़ाए हुए किसी नई रेसिपी को आज़मा रहा है। जब तक स्वाद बिल्कुल सही न हो जाता, वह किसी भी रेसिपी को मंज़ूरी नहीं देता था। मिल्टन चाहता था कि उसकी कैरामेल, अब तक किसी ने जितनी भी स्वादिष्ट कैरामेल चखी हों, उनसे भी बेहतर हों।

3. मधुर सफलता

इंग्लैंड से आया वह ऑर्डर तो बस शुरुआत था। जल्द ही दुनिया भर के लोग मिल्टन की कैरामेल मिठाइयाँ खाने लगे। उन सारी मिठाइयों ने तैंतीस साल के मिल्टन को एक अमीर आदमी बना दिया।



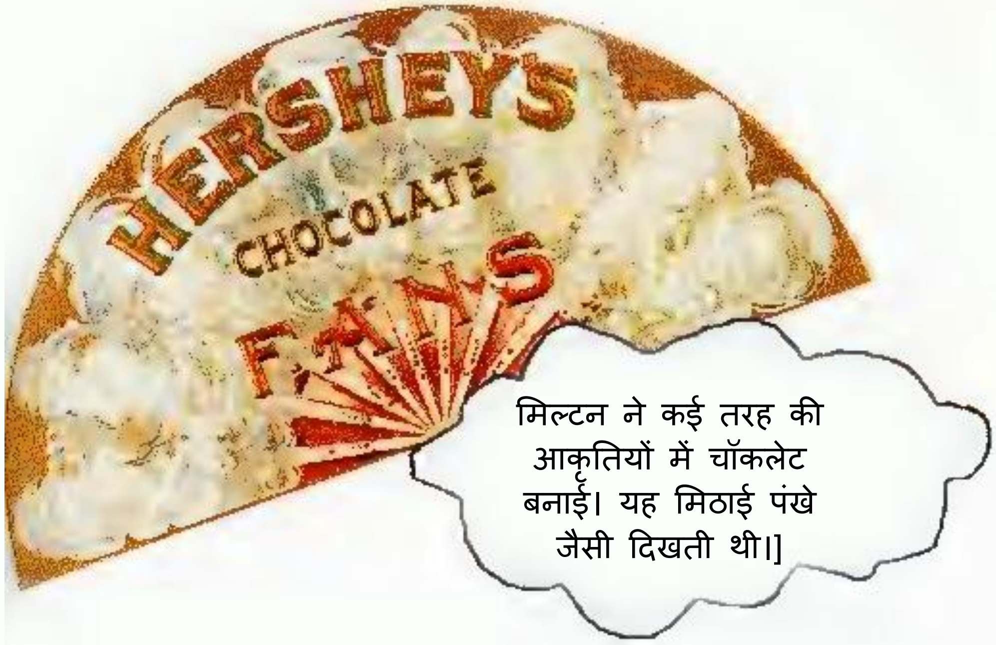
पैंतीस वर्ष की उम्र तक मिल्टन लैंकेस्टर के सबसे अमीर नागरिकों में से एक बन चुका था।



1893 में शिकागो की यात्रा के दौरान मिल्टन ने कई नए आविष्कार और मशीनें देखीं।

उसे नई कैंडीज़ के लिए अनोखे नाम सोचने में भी बहुत मज़ा आता था। जैसे रॉली पोलिज़, मैकगिंटीज़, जिम क्रैक्स और लोटस। कभी-कभी वह अपने कामगारों के बीच एक प्रतियोगिता भी रखता था। जो सबसे अच्छा नाम सोचता, वही जीतता।

अपने पिता की तरह ही मिल्टन को नए आविष्कारों और नए विचारों से प्यार था। 1893 में शिकागो में एक विशाल विश्व मेला आयोजित किया गया था। इस मेले में दुनिया भर के आविष्कार प्रदर्शित किए गए थे। जर्मनी की कुछ मशीनों ने मिल्टन को खास तौर पर मोहित कर दिया। वे मशीनें कोको के बीज और चीनी को चॉकलेट में बदल देती थीं।



मिल्टन ने कई तरह की आकृतियों में चॉकलेट बनाई। यह मिठाई पंखे जैसी दिखती थी।]

पहली बार मिल्टन ने उस अद्भुत चॉकलेट की खुशबू को महसूस किया। उसने उसका स्वाद चखा—वह बहुत ही स्वादिष्ट थी। एक नई मिठाई—यही तो वह चीज़ थी जो मिल्टन को बेहद उत्साहित कर देती थी! उसने तुरंत अपना मन बना लिया। "मैं चॉकलेट बनाऊँगा," उसने कहा। उसी समय उसने वह मशीनरी खरीद ली।

जल्द ही मिल्टन की फैक्ट्री गहरी, मीठी चॉकलेट बनाने लगी। मिल्टन उन्हें तरह-तरह की आकृतियों में बनाता था—पूरी 114 तरह की! जो ग्राहक साइकिल, सिगार या लॉब्स्टर के आकार की चॉकलेट चाहता, वह हर्शी चॉकलेट कंपनी में उसे पा सकता था।



जब किटी और मिल्टन की शादी हुई, तब किटी की उम्र छब्बीस वर्ष थी।

मिल्टन चॉकलेट के बारे में दिन-ब-दिन ज़्यादा सोचने लगा था। वह पहले ही देश के शुरुआती चॉकलेट निर्माताओं में से एक था। अब वह सबसे बड़ा बनना चाहता था।

अगस्त 1900 में मिल्टन ने एक महत्वपूर्ण फैसला लिया। उसने लैंकेस्टर कैरामेल कंपनी बेच दी। उस दिन के अख़बार की सुर्ख़ियों में पूरी कहानी छपी थी— "कैरामेल फैक्ट्री बिकी। मिल्टन एस. हर्शी को दस लाख डॉलर प्राप्त हुए।"

लैंकेस्टर कैरामेल कंपनी का बोर्ड हटा दिया गया। लेकिन मिल्टन के पास अब भी चॉकलेट कंपनी थी। और उसके बड़े-बड़े सपने थे। सबसे अच्छी बात यह थी कि उन सपनों को सच करने के लिए उसके पास अब पैसा भी था।

मिल्टन को उन दुकानों में जाना अच्छा लगता था जहाँ उसकी कैंडी बिकती थी। न्यूयॉर्क की एक कैंडी की दुकान में उसकी मुलाकात कैथरीन स्वीनी नाम की एक सेल्सगर्ल से हुई। मिल्टन उसे किटी कहकर बुलाता था। किटी जवान और सुंदर थी। उसमें ज़िंदादिल हास्यभाव भी था।

मिल्टन किटी से अक्सर मिलने लगा। जल्द ही दोनों को एक-दूसरे से प्यार हो गया। 25 मई, 1898 को उनकी शादी हो गई। मिल्टन किटी को लैंकेस्टर में अपने बड़े और आरामदायक घर में ले आया।

किस्मत का एक नाटकीय मोड़

मिल्टन और किटी को यात्रा करना बहुत पसंद था। वे यूरोप की कई यात्राएँ करते थे। एक बार उन्होंने एक शानदार नए जहाज़ में सफ़र करने के लिए टिकट भी खरीद लिए। लेकिन आख़िरी समय पर उनकी योजना बदल गई। यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि वह जहाज़ टाइटैनिक था। अपनी पहली ही समुद्री यात्रा में वह डूब गया!



4. मकई के खेतों पर बना एक कारखाना

मिल्टन के नए-नए विचार मानो एक के बाद एक उमड़ते चले आ रहे थे। सबसे पहले उसने तय किया कि वह मिल्क चॉकलेट बनाएगा। उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका में कोई और मिल्क चॉकलेट नहीं बनाता था। मिल्टन ही इसका पहला निर्माता बनने वाला था।

इस समय तक मिल्टन की कंपनी केवल गहरे रंग की सादी मीठी चॉकलेट ही बनाती थी। मिल्क चॉकलेट उससे कहीं ज़्यादा मुलायम और मलाईदार होती है, लेकिन उसे बनाना भी कहीं अधिक कठिन था। मिल्टन कोई वैज्ञानिक नहीं था। वह हमेशा नए-नए प्रयोग करके ही यह देखता था कि क्या काम करता है। इस बार भी उसने यही तरीका अपनाया।

शुरुआत में चीज़ें ठीक नहीं रहीं। एक-के-बाद-एक मिल्टन के चॉकलेट के बैच ख़राब होते रहे और उन्हें फेंकना पड़ा। लेकिन जब कभी कुछ सही हो जाता, तो उसके कामगार उसे चिल्लाते हुए सुनते—“हमें मिल गया!” धीरे-धीरे मिल्टन ने मिल्क चॉकलेट की अपनी खुद की रेसिपी तैयार कर ली। 1900 में उसने हर्शी की मिल्क चॉकलेट बार बनाना शुरू किया। वे तुरंत ही बहुत लोकप्रिय हो गईं।



हर्शी चॉकलेट बार सौ से भी अधिक वर्षों से लोगों की पसंदीदा मिठाई रही हैं।



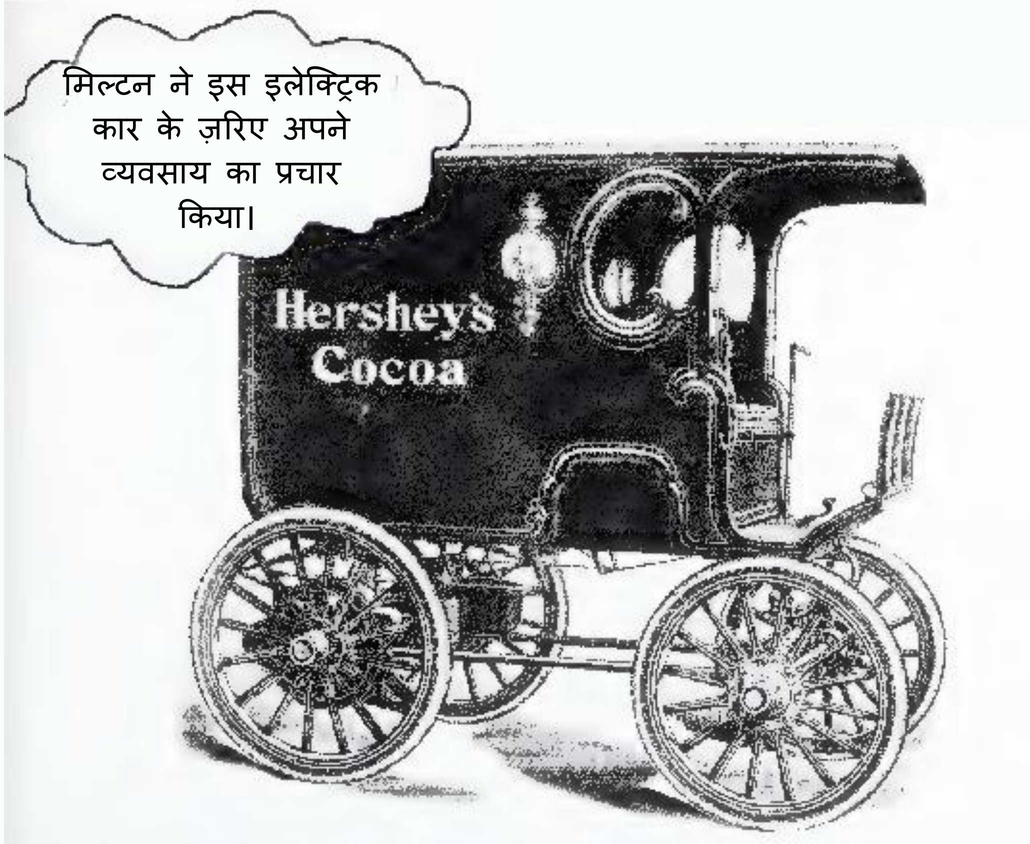
डेरी शहर में किसानों ने बहुत सारी गायें पाली हुई थीं। मिल्टन जानते थे कि उन्हें मिल्क चॉकलेट बनाने की लिए भरपूर दूध उपलब्ध हो जायेगा।

अब मिल्टन के लिए अपने अगले विचार को अमल में लाने का समय आ गया था। वह एक और बड़ी फैक्ट्री बनाना चाहता था। उसे ठीक-ठीक पता था कि वह इसे कहाँ बनाना चाहता है—डेरी टाउनशिप में, जहाँ उसका जन्म हुआ था। वहाँ भरपूर ज़मीन और साफ़ पानी उपलब्ध था। ग्राहकों तक अपनी चॉकलेट पहुँचाने के लिए वहाँ रेलमार्ग भी था। सबसे अच्छी बात यह थी कि वहाँ बहुत सारी गायें थीं। वही गायें उसे मिल्क चॉकलेट बनाने के लिए ज़रूरी दूध उपलब्ध कराएंगी।

जब लोगों ने उसकी योजना सुनी, तो ज़्यादातर को वह पागलपन लगा। सब कहते थे कि फैक्ट्रियाँ मकई के खेतों के बीच नहीं बनतीं। वे तो कस्बों में बनाई जाती हैं। एक फैक्ट्री को लोगों की ज़रूरत होती है। लोगों को घर चाहिए होते हैं। उन्हें स्कूल और चर्च भी चाहिए होते हैं।

लेकिन मिल्टन के पास एक और बड़ा विचार था। वह सिर्फ़ फैक्ट्री ही नहीं बनाएगा, बल्कि उसके चारों ओर एक पूरा शहर भी बसाएगा।

1903 में फैक्ट्री का निर्माण शुरू हुआ। वह दो फ़ुटबॉल मैदानों जितनी बड़ी थी। उसके अंदर छह सौ कामगारों के लिए जगह थी।



जैसे-जैसे फैक्ट्री बनती गई, वैसे-वैसे शहर भी फैलता गया। मिल्टन ने मोहल्लों की योजना खुद बनाई। उसने मुख्य सड़कों के नाम चॉकलेट एवेन्यू और कोको एवेन्यू रखे। अन्य सड़कों के नाम उन जगहों पर रखे गए जहाँ से कोको के बीज आते थे, जैसे जावा, कराकास और त्रिनिदाद।

अधिकांश फैक्ट्री वाले कस्बों में घर एक जैसे दिखते थे, क्योंकि इस तरह उन्हें बनाना सस्ता पड़ता था। लेकिन मिल्टन को यह मंज़ूर नहीं था। वह चाहता था कि हर घर की अपनी अलग शैली हो। एक बार उसे पता चला कि एक बिल्डर ने बहुत से घर एक जैसे बना दिए हैं। मिल्टन ने उन सभी घरों को तुड़वाने का आदेश दिया। फिर उन्हें उसकी योजना के अनुसार दोबारा बनाया गया।

ब्रोकली छोड़ो—चॉकलेट खाओ!

मिल्टन ने लैंकास्टर में अपनी नई फैक्टरी बनवाते समय भी चॉकलेट बनाना जारी रखा। उन्होंने अपने कर्मचारियों को अपनी चॉकलेट को "कैंडी" कहने की अनुमति नहीं दी। वह इसे एक स्वस्थ और पोषक आहार मानते थे। पत्रिकाओं और अखबारों में प्रकाशित विज्ञापनों में भी चॉकलेट बार को "भोजन के बराबर" कहा जाता था।

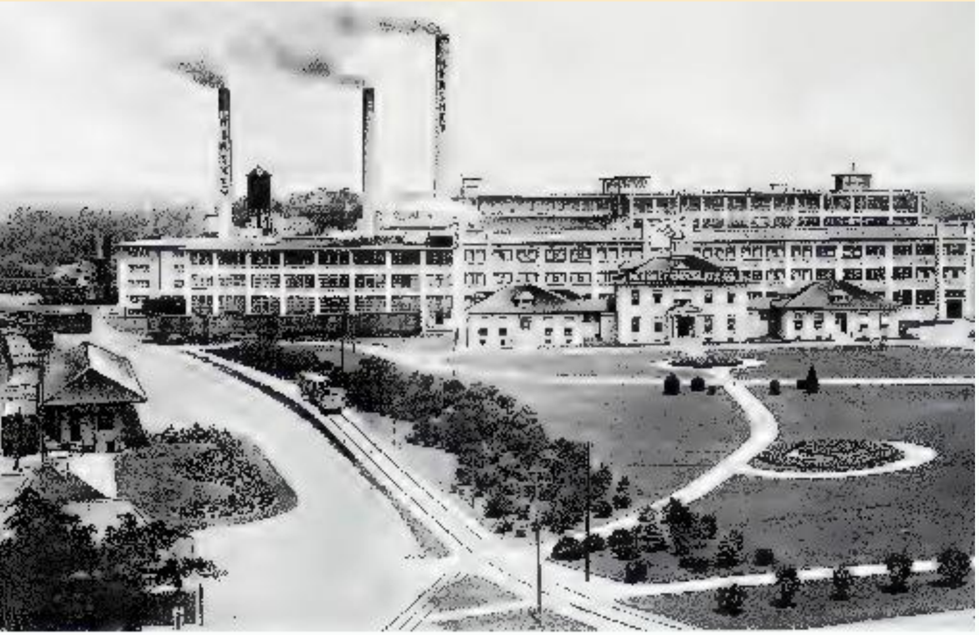


वह चाहता था कि उसके घर जितना संभव हो उतने आधुनिक हों। पुराने शौचालयों की जगह नए घरों में नए प्रकार के टॉयलेट थे। घरों को सड़क के बहुत नज़दीक रखने के बजाय, उनके सामने सुंदर लॉन और बड़े बैकयार्ड थे। घरों को इतना शानदार बनाने में मिल्टन को अतिरिक्त खर्च करना पड़ा, लेकिन उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। वह बस चाहते थे कि उनके कर्मचारी और उनके परिवार खुश रहें।

मिल्टन ने ट्रॉली लाइनें बिछवाईं ताकि लोग आसानी से दूसरे स्थानों से उनके शहर आ सकें। उन्होंने स्कूल और चर्च बनाए। शहर में दुकानें, एक होटल और एक बैंक भी थे।



मिल्टन ने अपने शहर की सड़कों के नाम खुद चुने।



मिल्टन ने अपने पुराने कारखाने के कर्मचारियों को नए कारखाने में काम करने के लिए बुलाया। इस तरह, किसी को भी स्थानांतरण के कारण नौकरी खोनी नहीं पड़ी।

मिल्टन चाहते थे कि शहर के लोग मज़े करें। इसलिए उन्होंने एक पार्क, गोल्फ कोर्स और चिड़ियाघर बनाए। उन्होंने अग्नि-शमन विभाग की भी शुरुआत की और खुद भी स्वयंसेवी अग्निशमन-कर्मी बन गए।

मिल्टन के शहर में सब कुछ था, सिवाय एक पोस्ट ऑफिस के। पोस्ट ऑफिस पाने के लिए शहर को एक नाम चाहिए था। इसलिए शहर का नाम रखने के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की गई। जीतने वाला नाम था हर्षीकोको।

हालाँकि, संयुक्त राज्य अमेरिका के पोस्टमास्टर को यह नाम पसंद नहीं आया। इसलिए नाम छोटा कर दिया गया, और शहर का नाम बस हर्षी रख दिया गया।

मिल्टन की चॉकलेट फैक्ट्री 1905 में चलने के लिए तैयार थी। लोग वहाँ आने लगे और विशाल मशीनों को चॉकलेट पीसते और मिलाते हुए देखकर आश्चर्यचकित हुए। वे तरल चॉकलेट से भरे विशाल बर्तन को देखते रहे। उन्होंने चॉकलेट की लजीज़ खुशबू महसूस की। जल्दी ही वह खुशबू पूरे शहर में फैल गई।



मिल्क चॉकलेट बनाना एक कठिन काम था। लेकिन मिल्टन के कर्मचारी जितनी चाहे उतनी चॉकलेट खा सकते थे।

मिल्टन ने तय किया कि वह अब 114 तरह की चॉकलेट नहीं बनाएंगे। वह केवल कुछ ही प्रकार बनाएंगे। उनके हर्षी मिल्क चॉकलेट बार पहले ही बड़े हिट थे।

1907 में, मिल्टन ने हर्षी किसेज़ बनाना शुरू किया। ये छोटे घंटी के आकार के दूध से बने चॉकलेट थे, जिन्हें चाँदी की पन्नी में लपेटा गया था। ये उतने ही लोकप्रिय हो गए जितने मिल्टन के चॉकलेट बार।



हर्षी किसेज़ इतने लोकप्रिय हो गए कि हर्षी शहर में उनकी आकृति वाले स्ट्रीटलाइट्स लगाए गए।

अब जब मिल्टन को केवल कुछ ही उत्पाद बनाने थे, उनकी विशाल फैक्ट्री बहुत सारी चॉकलेट बना सकती थी। जितनी अधिक चॉकलेट वे बनाते, उतनी ही सस्ती कीमत में वे बेच सकते थे। और जितनी सस्ती कीमत, उतनी ही अधिक चॉकलेट बिकती। लगभग हर कोई उस चॉकलेट बार को खरीद सकता था जिसकी कीमत केवल एक निकिल (पाँच सेंट) थी।

मिल्टन चाहते थे कि हर कोई उनकी चॉकलेट देखे और खरीदे। उन्होंने अपनी चॉकलेट सिर्फ कैंडी की दुकानों में ही नहीं बेची, बल्कि किराना स्टोर, बस स्टॉप और न्यूज़स्टैंड्स पर भी देशभर में बेची। इससे पहले ऐसा कोई नहीं करता था। जल्दी ही हर्षी किसेज़ और हर्षी मिल्क चॉकलेट बार हर जगह मिलने लगे।

और, बेशक, मिल्टन का नाम भी मशहूर हो गया। जल्द ही, अधिकांश लोगों के लिए हर्षी का मतलब ही चॉकलेट बन गया।



5. किटी का विचार

1909 तक, मिल्टन और किटी के पास अब तक की तुलना में सबसे अधिक धन था। वे इसके साथ कुछ खास करना चाहते थे। इस बार, किटी को एक महत्वपूर्ण विचार आया। मिल्टन और किटी के अपने कोई बच्चे नहीं थे। तो क्यों न ऐसा घर और स्कूल शुरू किया जाए जहाँ ऐसे बच्चों की देखभाल की जाए जिनके माता-पिता नहीं रहे, या वे उनकी देखभाल नहीं कर सकते थे?

मिल्टन को किटी का विचार बहुत पसंद आया। जल्दी ही दो भाई हर्षी औद्योगिक स्कूल के पहले छात्र बन गए। लड़के हर्षी होमस्टेड में रहते थे—यह वही पत्थर का फार्महाउस था जहाँ मिल्टन का जन्म हुआ था।

वे कक्षाओं में जाते और घर के काम करते। वे गायों का दूध निकालते और मुर्गियों को दाना खिलाते, बिलकुल वैसे ही जैसे मिल्टन अपने बचपन में करता था।

मिल्टन और किटी का स्कूल तेजी से बढ़ा। मिल्टन को छात्रों से मिलना बहुत पसंद था। वह सुनिश्चित करते थे कि उन्हें सभी जरूरी चीज़ें मिलें। इस प्रकार उन्हें किसी पिता की तरह ही गर्व महसूस होता था।



हर्षी होमस्टेड मिल्टन के स्कूल के शुरुआती छात्रों के लिए एक अच्छा घर साबित हुआ।



मिल्टन और किटी की यह तस्वीर किटी के बीमार होने से कुछ ही पहले ली गई थी।

लेकिन किटी स्कूल को समय नहीं दे सकीं, क्योंकि वह बहुत बीमार हो गईं। मिल्टन उन्हें दुनिया भर के डॉक्टरों और क्लिनिकों में ले गए, लेकिन उनकी तबियत बिगड़ती ही गई। 1915 में वह चल बसीं। मिल्टन बहुत दुखी थे। उन्हें किटी की याद बहुत सताती थी। उन्होंने उनके सम्मान में कुछ असाधारण करने का निर्णय लिया।

मिल्टन और किटी ने पहले ही स्कूल को काफी धन दिया था। 1918 में, जब मिल्टन इकसठ वर्ष के थे, उन्होंने अपनी पूरी संपत्ति—साठ मिलियन डॉलर—स्कूल को दान कर दी। अन्य अमीर लोग भी चैरिटीज़ को धन देते थे, लेकिन किसी ने सब कुछ नहीं दिया।

मिल्टन नहीं चाहते थे कि लोग उनके दान को लेकर ज़्यादा शोर-शराबा करें। उन्होंने न कोई भाषण दिया और न कोई घोषणा की। उन्होंने अख़बारों के रिपोर्टरों को भी इसके बारे में नहीं बताया। कई साल बीत गए, तब जाकर जनता को पता चला कि मिल्टन ने क्या किया था। यह उन्हें बिल्कुल ठीक लगा। उन्हें बस इतना जानकर खुशी थी कि किटी को इस पर गर्व होता।



मिल्टन को हमेशा रविवार का दिन अपने स्कूल के छात्रों के साथ बिताना बहुत पसंद था।

1920 के शुरुआती वर्षों में, हर्षी में व्यापार तेज़ी से फला-फूला। फैक्ट्री हर साल लाखों डॉलर मूल्य की चॉकलेट तैयार करती थी।

फिर 1929 में पूरे देश में कठिन समय आ गया। लोग इस दौर को महामंदी (Great Depression) कहते हैं। कामगारों की नौकरियाँ चली गईं, और कई लोग भूखे रहने लगे।

मिल्टन नहीं चाहते थे कि हर्षी में ऐसा हो। उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए कि शहर के सभी लोगों को काम मिलता रहे, तरह-तरह की नई निर्माण योजनाएँ बनाईं।



सरकार ने निर्माण परियोजनाओं के लिए पैसा देकर नए रोज़गार पैदा किए। मिल्टन ने भी हर्षी के लोगों के लिए यही किया।

महान आर्थिक मंदी ने कई परिवारों को बिना नौकरी और बिना घर के छोड़ दिया।



कुछ लोगों ने मिल्टन से कहा कि वह पागल हो गए हैं। उनका कहना था कि उन्हें कंपनी का पैसा बचाना चाहिए, न कि नई इमारतों पर खर्च करना चाहिए। लेकिन मिल्टन को इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि लोग क्या सोचते हैं।

एक बार किसी ने उनकी एक निर्माण साइट पर भाप से चलने वाली खुदाई मशीन (स्टीम शॉवेल) की ओर इशारा किया। ठेकेदार ने गर्व से कहा, “यह मशीन चालीस आदमियों का काम कर देती है।” मिल्टन यह सुनकर हैरान और दुखी हो गए। उन्होंने कहा, “इन्हें हटा दो। चालीस आदमियों को नौकरी पर रखो।”

1936 तक, महामंदी का सबसे बुरा दौर समाप्त हो गया। मिल्टन को इस बात पर गर्व था कि हर्षी में किसी भी कर्मचारी की नौकरी नहीं गई थी।

तब तक मिल्टन एक बुज़ुर्ग व्यक्ति हो चुके थे। 1937 में, जब वे अस्सी वर्ष के थे, संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना के कुछ लोग उनसे मिलने आए। उन्हें लग रहा था कि युद्ध हो सकता है, और वे चाहते थे कि उनके सैनिक तैयार रहें। उन्होंने मिल्टन से एक नए प्रकार की चॉकलेट बार बनाने के लिए कहा। यह बार सैनिकों के लिए आपातकालीन भोजन के काम आनी थी।

मिल्टन और उनके कर्मचारियों ने "फ़ील्ड राशन डी" बार बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। इसमें अतिरिक्त विटामिन और अन्य स्वास्थ्यवर्धक सामग्री डाली गई। तीन बार खाने का मतलब था पूरे दिन का भोजन करना। सबसे अच्छी बात यह थी कि ये बार सैनिक की जेब में पिघलती नहीं थीं।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी सैनिकों और नाविकों ने बड़ी मात्रा में फ़ील्ड राशन डी बार खाईं।

मिठाई, कोई लेना चाहेगा?

मिल्टन ने नए-नए प्रयोग करने का अपना शौक कभी नहीं छोड़ा। बुढ़ापे में भी वे अनोखी आइसक्रीम जैसी मिठाइयों के नए नुस्खे आज़माते रहे। उनकी आलू की आइसक्रीम और चुकंदर की चुस्की ज़्यादा लोकप्रिय नहीं हो सकीं!



मिल्टन ने अपना अठासीवाँ जन्मदिन केक और एक पार्टी के साथ मनाया।



मिल्टन युद्ध के अंत को देखने भर के लिए ही जीवित रहे। 13 अक्टूबर, 1945 को उनका निधन हो गया। उनकी आयु अठासी वर्ष थी। अपने जीवनकाल में उन्होंने देश के सबसे सफल व्यवसायों में से एक की शुरुआत की। उन्होंने एक समृद्ध नगर बसाया। उन्होंने चॉकलेट को देश की सबसे पसंदीदा मिठाई बना दिया। ये दुनिया को दिए गए उनके उपहार थे।

लेकिन उन्हें अपने विद्यालय और उन बच्चों पर सबसे अधिक गर्व था जिनकी उन्होंने मदद की थी। वही उनका भविष्य के लिए दिया गया उपहार था।

समयरेखा



1857 — मिल्टन हर्शी का जन्म 13 सितंबर को हुआ।
1871 — उन्हें एक छापाखाने में काम मिला।
1872 — उन्हें कैंडी बनाने का काम मिला।
1876 — उन्होंने अपना खुद का कैंडी व्यवसाय शुरू किया।
1882 — उनका व्यवसाय असफल हो गया।
1886 — उन्होंने अपना पाँचवाँ कैंडी व्यवसाय शुरू किया।
1890 — उनके कैरामेल के व्यवसाय ने उन्हें अमीर बना दिया।
1894 — उन्होंने चॉकलेट बनाना शुरू किया।
1898 — उन्होंने किटी स्वीनी से विवाह किया।
1900 — उन्होंने अपनी कैरामेल कंपनी दस लाख डॉलर में बेच दी।
1903 — उन्होंने हर्षी मिल्क चॉकलेट बार बनाना शुरू किया।
1905 — उनके नए कारखाने और पैंसिल्वेनिया के हर्षी नगर का निर्माण शुरू हुआ।
1907 — उनका नया कारखाना खुला।
1909 — उन्होंने हर्षी किसेज़ बनाना शुरू किया।
1915 — उन्होंने हर्षी इंडस्ट्रियल स्कूल की स्थापना की।
1918 — किटी का निधन हो गया।
1937 — उन्होंने अपनी पूरी संपत्ति हर्षी इंडस्ट्रियल स्कूल को दान कर दी।
1945 — 13 अक्टूबर को उनका निधन हो गया।

मिल्टन हर्शी स्कूल

मिल्टन की संपत्ति के उपहार ने यह सुनिश्चित किया कि उनका स्कूल आने वाले कई वर्षों तक बच्चों की मदद करता रहे। हर्शी इंडस्ट्रियल स्कूल का नाम बदलकर अब मिल्टन हर्शी स्कूल कर दिया गया है। वहाँ लगभग 1,200 लड़के और लड़कियाँ बिना किसी शुल्क के रहते और पढ़ते हैं। यह स्कूल विद्यार्थियों को उनकी ज़रूरत की हर चीज़ देता है—बैग से लेकर दाँतों के ब्रुश तक।

मिल्टन ने कभी यह सपना नहीं देखा था कि उनका स्कूल इतना बड़ा हो जाएगा। उन्होंने एक बार कहा था, “अगर हमने सौ बच्चों की भी मदद की होती, तो भी यह पूरी तरह सार्थक होता।” 1909 से अब तक, मिल्टन के स्कूल ने हज़ारों बच्चों की मदद की है। यह अमेरिका का सबसे बड़ा ऐसा स्कूल है जो अपने विद्यार्थियों को घर भी प्रदान करता है।

और यह सब चॉकलेट से शुरू हुआ।

